तिथियाँ बदलीं, त्योहार बँटे और हम भी बदल गए!

कभी त्योहारों का इंतजार इसलिए नहीं होता था कि कौन-सी तिथि को कौन-सा पर्व है, बल्कि इसलिए होता था कि उस दिन पूरा परिवार एक साथ मिलेगा। घरों में रौनक होगी, रिश्तेदार आएँगे, पड़ोसियों के यहाँ मिठाइयाँ जाएँगी और पूरा समाज एक साथ खुशियाँ मनाएगा। त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आपसी मेल-मिलाप, प्रेम और सामाजिक एकता के अवसर हुआ करते थे।

लेकिन आज एक अजीब बदलाव देखने को मिल रहा है। धनतेरस दो दिन, दीपावली दो दिन, गोवर्धन पूजा दो दिन और न जाने कितने पर्व अलग-अलग तिथियों पर मनाए जाने लगे हैं। पंचांग की गणना, तिथियों का अंतर और धार्मिक मान्यताओं के अपने-अपने तर्क हो सकते हैं। उनका अपना महत्व भी है, लेकिन इन सबके बीच एक सवाल मन को भीतर तक कुरेदता है।

क्या हमने त्योहारों की तिथियाँ तो बढ़ा लीं, लेकिन आपसी मेल-मिलाप के अवसर घटा दिए?

पहले पूरा मोहल्ला एक साथ दीपावली मनाता था। एक घर में मिठाई बनती तो दूसरे घर पहुँचती थी। बच्चे एक-दूसरे के घर जाते थे। रिश्तेदारों के आने-जाने का एक ही दिन होता था।

पड़ोसी केवल पड़ोसी नहीं, परिवार का हिस्सा हुआ करते थे। किसी के घर कोई खुशी होती तो पूरा मोहल्ला सहभागी बनता था।

लेकिन आज धीरे-धीरे रिश्ते कमजोर होते जा रहे हैं। हम अपने-अपने घरों में, अपनी-अपनी दुनिया में सिमटते जा रहे हैं। पड़ोस में कौन रहता है, उसके घर में क्या खुशी है, क्या परेशानी है, इससे हमें कोई लेना-देना नहीं रह गया है। दरवाजे बड़े हो गए, मकान आलीशान हो गए, लेकिन दिलों के दरवाजे छोटे होते जा रहे हैं।

पहले त्योहारों पर घरों के दरवाजे खुले रहते थे, आज घरों के दरवाजों के साथ-साथ मन के दरवाजों पर भी जैसे ताले लग गए हैं। मोबाइल पर सैकड़ों शुभकामना संदेश भेज दिए जाते हैं, लेकिन पड़ोस में जाकर दो मिनट हालचाल पूछने का समय नहीं है।

अब किसी के यहाँ आज त्योहार है, किसी के यहाँ कल। कोई कहता है हमारी तिथि सही है, कोई अपनी मान्यता को सही बताता है। धीरे-धीरे एक ही परिवार के लोग अलग-अलग दिन पूजा करने लगे हैं। समाज भी अपने-अपने तर्कों और मान्यताओं के छोटे-छोटे खेमों में बँटता जा रहा है।



विडंबना देखिए! जिस दीपावली पर हम अंधकार मिटाने के लिए दीप जलाते हैं, उसी दीपावली पर हमारे मनों के बीच दूरियों का अंधकार बढ़ता जा रहा है।

धर्म हमें जोड़ने के लिए है, अलग-अलग खेमे बनाने के लिए नहीं। परंपराएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, लेकिन उनका उद्देश्य केवल कर्मकांड निभाना नहीं, बल्कि आपसी सद्भाव और सामूहिक आनंद को जीवित रखना भी है।

मुझे किसी की धार्मिक मान्यता से आपत्ति नहीं है। हर व्यक्ति को अपनी श्रद्धा और परंपरा के अनुसार पर्व मनाने का अधिकार है। लेकिन क्या हम अपनी श्रद्धा के साथ सामूहिकता को भी जीवित नहीं रख सकते? क्या तिथि के मतभेद के बावजूद एक-दूसरे के घर जाकर शुभकामनाएँ नहीं दे सकते? क्या अपनी पूजा के साथ-साथ अपनों के साथ खुशियाँ बाँटने का समय नहीं निकाल सकते?

कभी हम त्योहारों पर एकत्रित होते थे, आज त्योहार ही हमें अलग-अलग तारीखों में बाँटते दिखाई दे रहे हैं।एक बार ठहरकर सोचिए, आने वाली पीढ़ियों को हम क्या सौंप रहे हैं? पंचांग की तिथियों का ज्ञान या त्योहारों की सामूहिक खुशियों की विरासत? उन्हें यह याद रहना चाहिए कि उनके बचपन में पूरा परिवार एक साथ दीपावली मनाता था, पड़ोस में मिठाइयाँ बाँटी जाती थीं और त्योहार किसी एक घर का नहीं, पूरे समाज का उत्सव हुआ करता था।

त्योहार कितने दिन मनाए जाएँ, यह अलग विषय है; लेकिन अपनों से मिलने का उत्साह, पड़ोसियों के घर जाने की परंपरा और समाज की एकजुटता कभी कम नहीं होनी चाहिए।

त्योहार दो दिन हों, चार दिन हों या पूरे सप्ताह हों, हमें कोई आपत्ति नहीं; आपत्ति तो तब है जब त्योहार बढ़ते जा रहे हैं, रिश्ते सिमटते जा रहे हैं और अपनापन घटता जा रहा है।

आइए, तिथियों पर बहस करने से पहले रिश्तों को बचाने की चिंता करें। अपनी-अपनी श्रद्धा का सम्मान करें, लेकिन सामाजिक एकता को भी उतना ही महत्व दें। क्योंकि दीपकों की संख्या बढ़ाने से ही घर रोशन नहीं होता, घर तब रोशन होता है जब उसमें रहने वालों के दिलों में भी उजाला हो।

अंततः इतना ही कहना चाहूँगी–

कैलेंडर में तारीखें अलग हो सकती हैं, पूजा की विधियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन दिलों में त्योहार एक ही रहना चाहिए।



क ही ऐसा न हो कि आने वाले समय में त्योहार तो बहुत हों, छुट्टियाँ भी बहुत हों, रोशनी भी खूब हो, लेकिन साथ बैठकर खुशियाँ बाँटने वाले अपने ही न हों!

वीणा वैष्णव रागिनी
राजसमंद

मूंढा



मैं सरकारी अस्पताल दे जनरल वार्ड च पेया दा हां। परसू ई मेरा हार्निया दा आपरेशन होया था। कल तां बिल्कुल बी होश नी थी ।आज्ज थोड़ा दिया खरा महसूस करा करदा हां।

दो दिन तक सिद्धे लेटी रैह्ने कने पिट्ठ किच्छ अकड़ी देई गेई दी ऐ।

घरे आल्लिया सहारा देई करी मिंजो बिठाया ऐ ते ओ अप्पु भांडे मांजणा बाह्ह चली गेई ऐ।

उंईयां मैं जाणदा हां के भांडे मांजणे दा तां एह सिर्फ बहाना ऐ। बाह्ह उसा किछी थां तोप्पी नै रौणा ऐ।

परसू छ बार बार रौणा लगी जांदी ऐ। मेरे सामणे नौ रौदी अपर उसदा चेहरा दिक्खी करी ई मिंजो पता लगी जांदा।

मता समझाना के मैं बिल्कुल ठीक हां एह कोई बड़ा बड्डा आपरेशन बी नी ऐ अपर मेरी गल्ल पूरी हौणे छ पैह्ले ई उसदियां हाक्खी भरी आदियां हन।

वार्ड च इक्क अधेड़ उम्र दी नर्स मरीजां ई दिक्खदी घुग्या करदी ऐ।

निक्का अस्पताल हौणे दे कारण मड़द जनानियां इक्की ई वार्ड च हन।सामणे आले बेड पर जेड़ी जनाना मरीज ऐ उसजो पट्ठी करणे वास्ते नर्स रुकी जांदी ऐ।

पट्ठी जनाना दे निचले हेस्से च करणी ऐ। मैं झकां ढल्ली करी लेटणा चाहन्दा पर टांके हिलणे दे डर ने ईंयां ई बेई रैंह्दा हां...।

दरवाजे पास्से दिक्खदा हां पर घरे आली कुते भी नजरी नी आई।

आखिरकार मैं हाक्खी मिट्ठी करी अपणा मुंह दुए पास्से घुमाई लैंदा हां।

शर्म कर कोई कपड़ा ई अपणे उप्पर लेई लैह्कां लेटी जा कदी कुछ दिक्खया दा नी क्या।

आवाज मेरे नेड़े छ ई आंदी ऐ। हाक्खी खोह्ळी करी दिक्खना तां ओ नर्स एह सब किच्छ मेरे जो ई बोह्ळा करदी ऐ।

मैं सुणी करी सुत्र होई जांदा हां...। आखिर मैं ईंदया के करी दिता ऐ।दर्द हौणे दे बावजूद मैं थोड़ी उच्ची आवाज च पुछ्दा हां- मैं के कित्ता।



मैं जाणदी तुह्ड़े साई लोकां ई।सामणे के ऐ दिक्खदा।

ओ पूरे वार्ड ई सुणांदी होई बोह्ळदी ऐ।

मेरे कन्ने आले बेड पर लेटया दा मरीज़ हल्की आवाज च किच्छ बोलणे दी कोशिश करदा ऐ पर नर्स उसजो बी घूरदी होई बाह्ह निकली जांदी ऐ।

मिंजो लगदा ऐ के बिना कुसे कसूरे दे ई मैं सबनी दे सामणे नंगा होई गिया हां।

हर कुसे दी नजर जियां मिंजो ई घूरया करदी हवै।

टांकेयां दी परवाह कित्ते बगैर मैं अप्पु जो झकां ढाली लैंदा हां अते उप्पर चादर ढकणे लेई लैंदा हां।

मेरियां हाक्खी छ लगातार अथरू निकल्दा करदे हन।

घरे आली बाह्ढे छ वापस आई जाह्ढ मेरी हालत दिक्खदी ऐ तां घबराई जांदी ऐ। तुसां जो के होया, मैं तुसां जो पुच्छ करदी दस्सा तां सेई किच्छ के होया।

उसदे बाद ओ बी रौणे आली होई जांदी ऐ पर मैं फिरी बी कुछ नी दसना तां मेरे कने आले मरीजे दे नेड़े बैठी इक्क बुजुर्ग जनाना मेरी घरे आल्लिया जो सारी गल्ल दसी दिंदी ऐ।

गल्ल सुणदे ई घरेआली गुस्से च इकदम बाह्ह निकली जांदी ऐ अते थोड़ी हाणा बाद डाक्टर अते नर्सां जो जोरे जोरे बोलदी होई मेरे सामणे ल्याई करी खड़ा करी दिंदी ऐ।

मैं चेहरे छ चादर इक्क पास्से करदा हां।- लै अबे के होईया..., के गला दी थी,हूण बोल..। परसू ई इनां दा आपरेशन होया ऐ। इनां जो अपणी सुध- बुध नी ऐ एह भला दुए पास्से के दिक्खगे।पट्ठी करणी ऐ तां सामणे पर्दा लगा। कैं तिजो कुने ढंग ने व्यवहार करणा नी सिखाया।

घरे आली गुस्से च बोल्दी कंबा करदी ऐ।

उसदा एह रूप दिक्खी करी मैं हैरान होई जांदा हां। नर्स पूरे वार्ड दे मरीजां अते डाक्टरे सामणे मेरे छ माफी मंगी करी बड़ी मुस्किल ने अपणा पीछा छुड़ाई करी उत्थवां निकल्दी ऐ।

मिंजो बी लगदा ऐ के जियां बौत बड़ा बोझ उतरी गिया हवै। वरना मैं सबनी सामणे खुद गी अपराधी महसूस था करया करदा।

आज्ज तां तैं कमाल ई करी दित्ता।- मैं चेहरे दे दर्द दे बावजूद मुस्कणे दी कोशिश करदे होए गलाया।

कमाल दी के गल्ल ऐ।मेरे छ तुह्ड़ी तकलीफ नी दिक्खी जांदी गलदी गलादे उसदियां हाक्खी फिरी भरी आईयां हन, अते ओ मेरी बांई हेड्ड अपणा मूंह्ढा लाई करी मिंजो सहारा दिंदे होए बिठ्ठाया लगदी ऐ।

मूल रचना(पंजाबी)
ऋकुलविंदर कौशल
210, राम राज्य एनक्लेव
संघेरा रोड, बरनाला
पंजाब–148109
हिमाचली अनुवाद
अशोक दर्द डलहौजी चंबा
हिमाचल प्रदेश

टीपीई इन इंडिया फाउंडेशन ने दीपावली मनाई

नई दिल्ली। खुशियां बांटने और समाज के जरूरतमंद वर्ग को उत्सवों से जोड़ने की भावना के तहत टेक्निकल प्रोफेशनल एजुकेशन इन इंडिया फाउंडेशन ने बंगला साहिब गुरुद्वारे के निकट स्थित आश्रय गृह में बच्चों और उनके परिवारों के साथ दीपावली का पर्व हर्षोल्लास से मनाया।



कार्यक्रम में बच्चों ने दीप जलाए, रंगोली सजाई और ग्रीन आतिशबाजी का आनंद लिया। संस्था की ओर से मिठाइयां, खिलौने और उपहार वितरित किए गए। बच्चों को दीपावली के सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व से भी परिचित कराया गया। संस्था के निदेशक बलवंत सोनी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए योगदान देना चाहिए। संस्था होली, लोहड़ी, दशहरा और राष्ट्रीय पर्वों सहित विभिन्न त्योहार जरूरतमंद बच्चों के साथ मनाती है, ताकि उनमें अपनत्व और समानता की भावना विकसित हो।

गौरतलब है कि टीपीई इन इंडिया फाउंडेशन के द्वारा किये जाने वाले सामाजिक कार्यों के बारे मे संस्था की प्रोजेक्ट बसेरा पहल की जानकारी देते हुए बताया गया कि इसके अंतर्गत बंगला साहिब के निकट रैन बसेरे में रहने वाले जरूरतमंद युवाओं को निःशुल्क सिलाई, कढ़ाई और योग का प्रशिक्षण दिया जाता है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

टीपीई इन इंडिया फाउंडेशन द्वारा इस आयोजन ने संदेश दिया कि दीपावली की वास्तविक खुशी तभी सार्थक है, जब समाज के वंचित और जरूरतमंद लोगों के जीवन में भी खुशियों का उजाला पहुंचे।

यमुना स्नान दिलाता है यम यातना से छुटकारा



पांच दिवसीय पर्वो के महापर्व दीपावली की अन्तिम कडी का पर्व हे भाईदूज। इसी दिन दीपोत्सव का समापन होता है। इस दिन भाई, बहनों के घर जाकर भोजन करते हैं। बहनें भाई की दीर्घायु कामना के लिए यमराज की पूजा करती है। इसी दिन यमराज की बहन यमुना और चित्रगुप्त सहित यमदूतों की पूजा भी करनी चाहिए। ब्रज क्षेत्र में भाई-बहन का यमुना में स्नान करना परम पवित्र व विशेष अनुष्ठान माना जाता है।

कहते हैं कि सूर्य पुत्री यमुना का एक ही भाई यमराज, उसके घर नहीं आ पाता था। यमुना बार-बार उसे बुलाती परंतु कार्यों में व्यस्त होने की वजह से वह नहीं आ पाता।

एक बार इसी दिन (कार्तिक शुक्ल द्वितीय) को वह अचानक यमुना के घर आ पहुंचे। यमुना ने उनकी खूब आवभगत की। भोजन कराया और तिलक लगाकर मंगल को कहा।

यमुना ने कहा-भाई बस, साल में एक बार तुम इसी तरह आज के दिन मेरे घर आया करो। साथ ही जो भी भाई इस दिन बहन के घर जाकर उसका भोजन ग्रहण करें और भेंट दें, उसे तुम्हारा भय न हो।यमराज ने यमुना की यह बात सहर्ष स्वीकारी। तभी से यह पर्व प्रचलित हो गया।

कैसे समय के साथ-साथ इस त्यौहार में परिवर्तन हो गये हैं। बहनें भी भाईयों के घर जाने लगी है। बहन-भाई के सौहार्द व बहन द्वारा भाई के सुखी-दीर्घायु जीवन कामना का पूर्व भाई दूज दीपोत्सव पर्व की महत्वपूर्ण कड़ी है।

इस दिन मथुरा के विश्राम घाट पर भाई बहन द्वारा हाथ पकड़कर संग-संग स्नान करने का विशेष महत्व है।

यमराज ने कहा था कि इस दिन जो भाई-बहन यमुना स्नान करेंगे, उन्हें यमयातना को नहीं भुगतना होगा। यहां पर लाखों यात्री यम द्वितीया पर स्नान कर धर्म लाभ उठाते हैं।

डॉ.अनिल शर्मा अनिल
धामपुर उत्तर प्रदेश

धर्म के विपरीत चलने वाला मानव से दानव बन जाता है

रावण के विनाश का कारण बनीं शराब, कबाब और शबाब जैसी तीन बुराइयाँ

उज्जैन, मध्य प्रदेश। (जितेंद्र प्रजापत)दीपावली के पावन अवसर पर परम् पूज्य परम संत बाबा उमाकान्त जी महाराज ने सत्संग में धर्म, मानवता, जीवों पर दया और संतों की महिमा के बारे में बताया।

बाबा उमाकान्त जी महाराज ने कहा कि मनुष्य का धर्म पूजा-पाठ करना, सच्चाई को धारण करना, हिंसा-हत्या से दूर रहना, जीवों पर दया करना, सेवाभाव रखना और परोपकार करना है। जो धर्म के विपरीत चलने लगता है, वही मानव से दानव हो जाता है और उसी को लोग राक्षस कहने लग जाते हैं।

महाराज जी ने कहा कि जीवों पर दया करनी चाहिए, उन्हें मारना-काटना नहीं चाहिए। यह मानव शरीर रूपी मंदिर है, इसे गंदा नहीं करना चाहिए और इसमें मुर्दा-मांस नहीं डालना चाहिए। भगवान राम और रावण दोनों मनुष्य शरीर में आए, लेकिन रावण हिंसा करने लगा, जीवों को खाने लगा और शराब पीकर अपनी बुद्धि खराब करने लगा। उसके अंदर शराब, कबाब और शबाब जैसी तीनों बुराइयाँ आ गईं, जो उसके विनाश का कारण बनीं।



जीवात्मा के पूर्ण होने का अर्थ प्रभु के पास पहुंचना

महाराज जी ने समझाया कि शरीर पूरा होने का मतलब है कि इस शरीर का समय पूरा हो गया, जबकि जीवात्मा पूरी हो जाने का अर्थ है कि वह अपने मूल स्थान सतलोक पहुंच गई। जब तक मनुष्य की उम्र रहती है और उसे शरीर में रहना होता है, तब तक जीवात्मा ऊपरी लोकों में आती-जाती रहती है। शरीर का समय पूरा होने के बाद वह सतलोक जाकर अपने मूल स्थान में मिल जाती है।

संतों का हृदय जीवों के प्रति दया से पिघल जाता है

महाराज जी ने कहा कि संतों की गति और उनका मत अलग होता है। संतों से जीतना आसान नहीं होता। वे कुश्ती नहीं लड़ते, बल्कि अपनी वाणी के द्वारा हुकुम देते हैं। वे मनुष्य, देवी-देवताओं या किसी भी आत्मा के लिए ऐसा चाह लेते हैं कि वह हो जाए। उन्होंने बताया कि मनुष्य शरीर अवगुणों की खान है। कोई भी मनुष्य दूध का धुला पैदा नहीं होता, लेकिन जीवों को देखकर संतों का हृदय बहुत जल्दी पिघल जाता है और वे उन पर दया कर ही देते हैं।

गोवर्धन पूजा के साथ गोशाला में विभिन्न आयोजन सम्पन्न

महिदपुर।जवाहर डोसी पीयूष

श्री गोपाला गोशाला झारडा कटन पर दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा के साथ विभिन्न कार्यक्रम समिति अध्यक्ष अनिल कुमार भट्ट की अध्यक्षता में आयोजित किये गये।



गोशाला समिति के सचिव प्रभुदयाल शर्मा ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि गोशाला में सभी गायों की पूजा कर आरती उतारी गई।पश्चात गायों को लापसी व पुड़ी का भोजन पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार दुबे, समिति उपाध्यक्ष पंवार,सहसचिव सदस्य शम्भूशरण तिवारी, शंकरलाल विश्वकर्मा,गिरधारीलाल उथरा, दिलीपकुमार इनानी,शांतिलाल छजलानी, विरेन्द्र सोनी,मनोज शर्मा,अमरसिंह ठाकुर, पारस लूणावत,पं.भरतदासजी,रमेश, जगदीश ने उपस्थितजनों के साथ कराया। गोशाला,धर्मशाला आदि संस्थाओं मे कार्यरत कर्मचारियों का स्वागत कर गोवर्धन पूजा के अवसर पर वस्त्र आदि भेट किये।

कर्मचारियों के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उपस्थितजनों ने कहा कि आपको गोसेवा का आशीर्वाद आपके जीवन मे हमेशा मिलता रहेगा।इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों कार्यकर्त्ताओं का आभार सचिव प्रभुदयाल शर्मा ने व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा की।

समाजसेवी धनरूपमल जैन को समाज रत्न की उपाधि से किया सम्मानित

आष्टा। वर्तमान शासन नायक 1008 भगवान महावीर स्वामी के 2553 वां निर्वाण कल्याणक एवं दीपावली महापर्व सोमवार को कार्तिक कृष्ण अमावस्या के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिव्योदय जैन तीर्थ किला मंदिर में श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम पूज्य मुनि श्री मुनिसागर महाराज, मुनि श्री अभेदसागर महाराज, मुनि श्री अगर्भसागर महाराज एवं ऐलक श्री मंथनसागर महाराज सससंघ के पावन सानिध्य में संपन्न हुआ। आयोजित कार्यक्रम में पूज्य मुनिश्री के शुभ सानिध्य में श्री दिगंबर जैन पंचायत समिति आष्टा द्वारा समाज के संरक्षक एवं भारतीय जनता पार्टी के नगर महामंत्री श्री धनरूपमल जैन को श्री दिगंबर जैन समाज पंचायत समिति द्वारा समाज रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।



आयोजित कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष आनंद जैन, चातुर्मास समिति के संयोजक गोपी सेठी, अमन जैन रमेश आदिनाथ कैलाश जैन,धीरज जैन, पारस जैन, मनोज जैन, संतोष जैन, शरद जैन, मुकेश जैन ने श्री धनरूपमल जैन को समाज रत्न की उपाधि से सम्मानित किया है। श्री जैन को इस उपलब्धि पर विधायक श्री गोपालसिंह इंजीनियर सहित सभी जनप्रतिनिधियों, संगठन के पदाधिकारियों ने बधाई दी

पुस्तक समीक्षा

समरांगण से (खंडकाव्य)

पुस्तक का शीर्षक- समरांगण से, लेखक- हेमराज सिंह हेम